# अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय, भोपाल (म.प्र.)

## पत्रोपाधि पाठ्यक्रम
(एक वर्षीय)

## विषय – सुगम–संगीत

सत्र - 2018-19

## संकाय – ललित कला

(नियम, परीक्षा योजना, अंक योजना एवं पाठ्यक्रम)

# अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय, भोपाल

## पत्रोपाधि पाठ्यक्रम

## (एक वर्षीय)

## सुगम–संगीत

### संगीत विभाग

उद्देश्यः–

- विद्यार्थी संगीत, गायन एवं वादन के मूल तत्वों को समझ सकेंगे जो भारत की पारंपरिक शैली से ही निकलती है।
- सुगम संगीत की विभिन्न विधाओं का जैसे गीत, गजल, भजन शैलियां इत्यादि से संगीत में आए हुए विभिन्न सैद्धांतिक एवं वैचारिक महत्व पर चिन्तन कर उन विधाओं का कक्षा में अध्ययन, प्रदर्शन के तरीकों, प्रक्रियाओं तथा अध्यापन कला को स्थापित कर सकेंगे।
- संगीत परंपराओं में निहित विभिन्न अभ्यासों को क्रियान्वित करने की योग्यता विकसित कर सकेंगे।
- संगीत की सैद्वांतिक समझ और व्यवसायिक क्षेत्रों में प्रदर्शन, नियोजन तथा आजीविका की संवहनीयता को प्राप्त कर सकेंगे।
- विद्यार्थी समझ सकेंगे कि लोक संगीत शिक्षण प्रक्रिया अन्य शैक्षणिक पाठ्यक्रमों की भॉति उसके अभ्यास तत्व, दक्षता संवर्धन, अध्यापन कला के साथ – साथ आयमूलक पृष्ठभूमि में भी अर्थपूर्ण है।

# अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय, भोपाल

## पत्रोपाधि पाठ्यक्रम
## (एक वर्षीय)
## विषय – सुगम–संगीत
## अकादमिक सत्र 2018 से 2019

परीक्षा योजना – सैद्धांतिक प्रश्न पत्रों के लिए निर्देश :–

समय – 3 घंटे

(अ) 1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न – 10
(बहु वैकल्पीय उत्तर)

अंक निर्धारण – 10
प्रत्येक – 01 अंक

नोट – वस्तुनिष्ठ प्रश्न सम्पूर्ण पाठ्यक्रम में से चयन किये जायेंगे।

2. लघुउत्तरीय प्रश्न – 05

अंक निर्धारण – 15
प्रत्येक – 03 अंक

नोट – प्रश्न सम्पूर्ण पाठ्यक्रम में से चयन किये जायेंगे।

3. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न – 05
(आंतरिक विकल्प के साथ)

अंक निर्धारण – 45
प्रत्येक – 09 अंक

नोट – प्रश्न सम्पूर्ण पाठ्यक्रम में से चयन किये जायेंगे।

अधिन्यास / (एसाइन्मेंट) कार्य

अंक – 30

प्रायोगिक परीक्षा के अंक (प्रति एक) :–

पूर्णांक 100

# अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय, भोपाल

## पत्रोपाधि पाठ्यक्रम

## (एक वर्षीय)

## सुगम–संगीत

### प्रथम प्रश्नपत्र – संगीत का सामान्य परिचय

अधिकतम अंक – 100 उत्तीर्णांक – 40

आवश्यकता :–

1. भारतीय सुगम संगीत की शैलियों से परिचय कराने हेतु।
2. नई पीढ़ी में, समृद्ध सुगम संगीत को जीवित रखने हेतु।
3. संगीत का बोध विकसित करने हेतु।
4. संगीत कला को रोजगार के अनुरूप बनाने हेतु

उद्देश्य :–

1. विद्यार्थी, सुगम संगीत के मूल तत्वों को समझ सकेंगे।
2. संगीत के शुद्ध/कोमल स्वरों का गायन एवं महत्व समझ सकेंगे।
3. नाद, स्वर, श्रुति आदि के विषय में विस्तार से जान सकेंगे।

### पाठ्यक्रम

सैद्धांतिक–1

**इकाई 1** – सुगम संगीत का अर्थ एवं परिभाषा

**इकाई 2** –सुगम संगीत की शैलियां – गीत, ग़जल, भजन, भावगीत, भक्तिगीत

**इकाई 3** – सुगम संगीत की शैली में रागों का प्रयोग

**इकाई 4** – भैरव, भैरवी, खमाज, काफी, यमन रागों का सामान्य परिचय

**इकाई 5** – शास्त्रीय एवं सुगम संगीत का तुलनात्मक अध्ययन

महत्व :–

1. जीवन में संगीत की भूमिका एवं महत्व।
2. ताल एवं लय का संगीत में महत्व।
3. संगीत में अनुशासन का महत्व।

पाठ्यपुस्तक :–

01. संगीत विशारद – बसंत, प्रकाशन – संगीत कार्यालय, हाथरस।
02. विनय पत्रिका – ब्रम्हानंद भजनावली
03. कबीर दोहावली – कबीर भजनावली
04. निराला के गीत संगीत का परिपेक्ष्य – डॉ. नीना श्रीवास्तव
05. गजल अंक (संगीत मासिक पत्रिका)
06. फिल्मी शास्त्रीय संगीत अंक भाग – 1
    भाग – 2

# अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय, भोपाल

## पत्रोपाधि पाठ्यक्रम

## (एक वर्षीय)

## सुगम–संगीत

## द्वितीय प्रश्नपत्र – भारतीय संगीत का संक्षिप्त इतिहास

अधिकतम अंक – 100 उत्तीर्णांक – 40

आवश्यकता :–

1. हिंदी चित्रपट संगीत को अकादमिक स्तरीयता प्रदान करने हेतु।
2. हिंदी चित्रपट संगीत की लोकप्रियता को देखते हुये, पाठ्यक्रम रुचिकर बनाने हेतु।
3. हिंदी चित्रपट संगीत की लोकप्रियता के मूल तत्वों की पहचान करने हेतु।

उद्देश्य :–

1. हिंदी चित्रपट संगीत के विभिन्न अभ्यासों द्वारा गायन क्षमता विकसित करना।
2. संगीत विषय को रोजगार के अनुरूप बनाना।
3. हिंदी चित्रपट संगीत में छात्रों को निपुण करके उनके लिये व्यवसायिक जमीन तैयार करना।

## पाठ्यक्रम

### सैद्धांतिक–2

**इकाई 1** – भारतीय चित्रपट संगीत का इतिहास।

**इकाई 2** – मूक चलचित्रों में संगीत।

**इकाई 3** – हिंदी चलचित्रों में पार्श्व गायन का प्रारंभ।

**इकाई 4** – चित्रपट संगीत में शास्त्रीय, लोक एवं पाश्चात्य संगीत का मिश्रित प्रयोग।

**इकाई5** –हिंदी चलचित्रों के प्रमुख गीतकार संगीत निर्देशक एवं पार्श्व गायक/गायिका।

महत्व :–

1. चित्रपट संगीत में लोक, शास्त्रीय एवं पाश्चात्य संगीत के प्रयोग का महत्व।
2. हिंदी चित्रपट संगीत की जनसामान्य में सर्वाधिक लोकप्रियता का महत्व।

पाठ्यपुस्तक :–

1. संगीत विशारद – लक्ष्मीनारायण गर्ग
2. भारतीय संगीत का इतिहास – परांजये
3. संगीत बोध – परॉजपे
4. भारतीय तालों का इतिहास – अरूण कुमार सेन
5. मीरा, कबीर, ब्रम्हानंद, तुलसी, संत कवियों के भजन
6. प्रसिद्व शायरों की गजलों की पुस्तकें बशीर बद्र, साहिर लुधियानवी, नीरज

# अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय, भोपाल

पत्रोपाधि पाठ्यक्रम
(एक वर्षीय)
सुगम–संगीत
प्रायोगिक–1

अधिकतम अंक – 100 उत्तीर्णांक – 40

आवश्यकता :–

1. कंठ सुरीला करने हेतु स्वर अभ्यास।
2. कोमल तीव्र स्वरों का स्पष्ट गायन हेतु।

उद्देश्य :–

1. रागों का परिचय, गीतों के माध्यम से प्रदान करना।
2. समूह गीत गायन क्षमता विकसित करना।

## प्रायोगिक–1

1. सुगम संगीत की विभिन्न शैलियों का गायन (गीत, गजल, भजन)
2. हिंदी चलचित्र के स्तरीय गीतों का गायन
3. हारमोनियम पर देश भक्ति गीतों का वादन प्रदर्शन
4. हारमोनियम पर सरल चलचित्र गीत बजाकर गाना
5. ढौलक पर दादरा एवं कैहरवा ताल बजाना

महत्व :–

1. संगीत परंपराओं में निहित विभिन्न अभ्यासों को क्रियान्वित करने की योग्यता विकसित कर सकेंगे।

## पाठ्यपुस्तक :–

01. क्रमिक पुस्तक मलिका – पंडित विष्णुनारायण भातखंडे भाग–1 एवं भाग–2

# अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय, भोपाल

पत्रोपाधि पाठ्यक्रम

(एक वर्षीय)

सुगम–संगीत

प्रायोगिक–2 (मंच प्रदर्शन)

अधिकतम अंक – 100 उत्तीर्णांक – 40

आवश्यकता :–

1. प्रचलित रागों का ज्ञान – कराना।
2. खयाल गायकी का अभ्यास कराना।
3. गीत, ग़ज़ल, भजनों की गायन क्षमता विकसित करना।

उद्देश्य :–

1. साहित्यक शैलियों की गायन क्षमता विकसित करना।
2. द्रुत खयाल शैली का प्रचार एवं परिपक्वता।
3. उच्चारण एवं स्वरों की शुद्धता।

## प्रायोगिक–2

1. स्वैच्छा से सुगम संगीत की किन्ही दो शैलियों का गायन–प्रदर्शन
2. बाह्य परिक्षक की इच्छा अनुसार सुगम संगीत की किसी भी शैलियों का गायन एवं मौखिकी

महत्व :–

1. भारतीय शास्त्रीय संगीत के रागों का महत्व दर्शाते हुये गीतों को सार्थक बनाना।
2. सुगम संगीत की शैलियों को आधुनिक पीढ़ी के समक्ष लोकप्रिय बनाना।

पाठ्यपुस्तक :–

01. क्रमिक पुस्तक मलिका – पंडित विष्णुनारायण भातखंडे भाग–1 एवं भाग–2